प्रथम सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों !! १९ अगस्त को संत तुलसीदासजी जयंती है तो आज की कहानी में हम बताएंगे संत तुलसीदासजी के जीवन का एक अद्भुद प्रसंग !! फिर संस्कृति सुवास में हम जानेंगे बर्तन साफ करने के लिए राख के प्रयोग का वैज्ञानिक आधार ।

फिर मजेदार गतिविधि में हम जानेंगे घर में शुभ क्या है और अशुभ क्या ? इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञान प्रतियोगिता, कीर्तन, प्राणायाम और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे पावन सत्संग ।

तो आइए, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते हैं आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu.be/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

शिखा स्पर्श : सभी बच्चे शिखा के स्थान पर हाथ लगाकर मंत्र उच्चारण करेंगे -

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।

यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ ॐ

(हे विश्व के देव ! हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों को दूर करें, और ब्रह्माण्ड में जो भी कल्याणकारक, शुभ गुण, कर्म, स्वभाव, सुख हैं वो हमें प्राप्त हों ।)

अब सभी बच्चे करेंगे “ॐकार” गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM

(2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें ।)

3. आओ सुनें कहानी

तुलसीदासजी का जीवन प्रसंग

यह प्रसंग गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन की सबसे अलौकिक और भावुक कर देने वाली घटनाओं में से एक है। इसका विस्तृत वर्णन 'भक्तमाल' (नाभादास जी द्वारा रचित) और प्रियादास जी की टीकाओं में मिलता है।

तुलसीदास जी जब काशी के अस्सी घाट पर रहकर 'रामचरितमानस' की रचना कर रहे थे, तब स्थानीय कुछ लोग उनकी बढ़ती प्रसिद्धि से जलने लगे। उन्हें लगा कि एक साधारण व्यक्ति संस्कृत के बजाय लोकभाषा (अवधी) में रामायण

लिखकर सनातन धर्म का अपमान कर रहा है। उन्होंने पहले तो ग्रंथ को नीचा दिखाने की कोशिश की, लेकिन जब सफल नहीं हुए तो उन्होंने दो पेशेवर चोरों को रामचरितमानस की मूल प्रति चुराने के लिए भेजा।

आधी रात का समय था। चारों ओर सन्नाटा था। चोर जैसे ही तुलसीदास जी की कुटिया के करीब पहुँचे, उनकी आँखें फटी की फटी रह गईं। उन्होंने देखा कि कुटिया के बाहर दो बेहद सुंदर किशोर हाथ में धनुष-बाण लिए घूम रहे हैं। एक का रंग नभ के बादलों जैसा सांवला था। दूसरे का रंग दमकते हुए सोने जैसा गोरा था। उनका व्यक्तित्व इतना तेजस्वी था कि चोरों की हिम्मत नहीं हुई कि वे आगे बढ़ सकें। वे डरकर भाग गए।

अगली दो-तीन रातों तक यही सिलसिला चलता रहा। चोर जितनी बार आते, उतनी बार उन दिव्य राजकुमारों को पहरा देते देख लौट जाते। चोर हैरान थे कि इस गरीब साधु के पास ऐसा कौन सा खजाना है, जिसकी रक्षा के लिए राजाओं जैसे राजकुमार रात भर जाग रहे हैं?

अगली सुबह, कौतूहल और ग्लानि से भरे चोर तुलसीदास जी के पास पहुँचे। उन्होंने उनके पैर पकड़ लिए और पूछा–

"बाबा! आप तो बहुत साधारण रहते हैं, फिर ये दो राजकुमार कौन हैं जो रात भर आपकी कुटिया के चक्कर काटते हैं? एक सांवला है, एक गोरा है... उनके हाथों में धनुष है और वे बहुत दिव्य ओजस्वी तेजस्वी लग रहे थे।"

चोरों के मुंह से यह वर्णन सुनते ही तुलसीदास जी के हाथ से लेखनी गिर गई। वे समझ गए कि वे कोई और नहीं, स्वयं भगवान श्री राम और लक्ष्मण जी थे। तुलसीदास जी फूट-फूट कर रोने लगे। वे बार-बार अपने आप को धिक्कारने लगे– "हे नाथ! मुझ अधम की रक्षा के लिए, कागज़ के कुछ पन्नों की रक्षा के लिए, आपको रात भर जागना पड़ा? आपने अपने कोमल चरणों को रात भर कष्ट दिया?"

इस घटना ने तुलसीदास जी को इतना झकझोर दिया कि उन्होंने तुरंत अपनी कुटिया का बचा-कुचा सामान भी दान कर दिया ताकि प्रभु को फिर से पहरा देने का कष्ट न करना पड़े। उन्होंने अपनी रचना 'रामचरितमानस' को सुरक्षित स्थान (टोडरमल के पास) पर रखवा दिया।

वहीं, वे दोनों चोर भी भगवान के दर्शन पाकर कृतार्थ हो गए। उन्होंने चोरी का पेशा हमेशा के लिए त्याग दिया और राम-नाम का जप करते हुए साधु का जीवन व्यतीत करने लगे।

यह कथा हमें विश्वास दिलाती है कि यदि हृदय में सच्ची लगन हो, तो ईश्वर हमारे घर की चौखट पर पहरा देने के लिए भी तैयार रहते हैं ! तो सभी बच्चे जोर से बोलेंगे - श्री सदगुरुदेव भगवान की जय ।

4. भजन / पाठ

आज हम विशेष भजन गायेंगे -

सबके दिल में है तू ही समाया प्रभु !!

https://youtu.be/5IFIqgbRFjk

5. ज्ञान का चुटकुला

मोहन : पप्पू, तुम तो कह रहे थे कि तुम्हारा सिरदर्द हो रहा है, फिर तुम शीर्षासन क्यों कर रहे हो?

पप्पू : वह क्या है ना, मैंने अभी-अभी सिरदर्द की गोली खाई है, उसका असर कहीं पेट में न चला जाए, बल्कि सिर में जाए, इसलिए सिर के बल खड़ा हूं !

सीख - युक्तियुक्त व्यवहार करना चाहिए ।

6. संस्कृति सुवास :-

राख से बर्तन साफ़ क्यों करना ?

बच्चों, लकड़ी की राख से बर्तन साफ करना केवल गरीबी या मजबूरी नहीं बल्कि समझदारी थी। आइये हम इसका वैज्ञानिक आधार जानते है-

लकड़ी की राख में पोटेशियम कार्बोनेट, कैल्शियम कार्बोनेट, सोडियम कार्बोनेट जैसे कार्बन कंपाउंड होते है। इन कंपाउंड में क्षारीय (Alkaline) के गुण होते हैं। जब इस राख को चिकनाई युक्त बर्तनों पर थोड़े से पानी के साथ डाला जाता है, तो राख चिकनाई और पानी के साथ मिलकर केमिकल रिएक्शन क्रिएट करता है, जिससे घी-तेल की चिकनाई साबुन जैसे हलके घोल में बदल जाती है जिसे साइंस में सैपोनिफिकेशन (Saponification) कहते हैं। इस प्रक्रिया से बर्तनों की चिकनाहट और ग्रीस बर्तनों के अन्दर ही बने सैपोनिफिकेशन प्रोसेस से कट कर पूरी तरह से ख़तम हो जाती है। यदि बर्तनों में बहुत अधिक

चिकनाहट होती है तो समझदार माइयां उसमें थोड़ा सा नींबू का रस भी मिला देती है, जिससे सैपोनिफिकेशन और अधिक स्ट्रोंग बन जाता है।

राख का टेक्सचर बहुत ही महीन लेकिन खुरदुरा होता है। यह एक नेचुरल स्क्रबर की तरह काम करता हैं जो बर्तनों की सतह और धातु को नुकसान पहुँचाए बिना खाने के अवशेष और जिद्दी दागों को खुरच कर साफ कर देता है। कार्बन का गुण होता है कि यह बदबू (Odour)और बैक्टीरिया को सोख लेता है। यह एक नेचुरल क्लींजर का काम करता है, जिससे बर्तन अंदर से पूरी तरह से कीटाणुरहित और दुर्गंध-मुक्त हो जाते हैं। (क्रमशः)

7. पर्व महिमा :-

सच्ची स्वतंत्रता

15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों की बाह्य गुलामी तो दूर हुई लेकिन उनके विचारों की गुलामी तो हमारे दिल-दिमाग में घुसी हुई है ।

पूज्य लीलाशाह बापू कहते हैं, हमारा देश 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम जैसा चाहे वैसा करें। विदेशों में कोई भी व्यवहार करने की खुली छूट है। मान-मर्यादा, धर्म, चरित्र सब नष्ट हो रहे हैं वे मनुष्य होकर पशुओं से भी अधम हो चुके हैं, क्या तुम इसे आजादी कहते हो ? कदापि नहीं, यह आजादी नहीं महाविनाश है। विषय-वासनाओं के वश में रहकर जैसा मन में आया वैसा कर लिया यह स्वतंत्रता नहीं बल्कि गुलामी है। मनमानी तो पशु भी कर लेता है फिर मनुष्यता कहाँ रही ? जब तुम अपने मन पर संयम रखते हो, माता-पिता, गुरूजनों एवं सत्शास्त्रों की आज्ञा में मन को वश में रखते हुए कार्य करते हो तब तुम स्वतंत्र हो। इसके विपरीत यदि मन के कहे अनुसार चलते रहे तो तुम मन के गुलाम हुए। भले ही अपने को स्वतंत्र कहो परंतु हो महागुलाम….

अतः मेरे भैया ! स्वतंत्रता का अर्थ उच्छ्रंखलता नहीं है। शहीदों ने खून की होली खेलकर आप लोगों को इसलिए आजादी दिलायी है कि आप अपना, समाज का तथा देश का कल्याण कर सकें। स्वतंत्रता का सदुपयोग करो तभी तुम तथा तुम्हारा देश स्वतंत्र रह पायेगा, अन्यथा मनमुखता के कारण अपने ओज-तेज को नष्ट करने वालों को कोई भी अपना गुलाम बना सकता है।

8. दोहा :-

तुलसी साथी विपत्ति के, विद्या विनय विवेक।
साहस सुकृति सुसत्यव्रत, राम भरोसे एक॥

अर्थ:- मुसीबत के समय विद्या, विनम्रता, विवेक, साहस, अच्छे कर्म, सत्य का व्रत और भगवान का भरोसा ही सच्चे साथी होते हैं।

9. गतिविधि

घर में शुभ क्या है और अशुभ क्या है? यह सही मिलान करना है, देखते हैं कौन सबसे पहले सही करके लाता है..

आँवला का वृक्ष

कुत्ता,

खाली कलश

घऱ में टूटा-फूटा बर्तन

टूटी-फूटी या जली हुई प्रतिमा

तुलसी का पौधा

तोरण (बंदनवार)

दीपक

देसी गाय

फिटकरी

बबूल का वृक्ष

बिल्ली

भरा हुआ कलश

मुर्गा,

रंगोली

गतिविधि का उत्तर -

अशुभ	**शुभ**
घऱ में टूटा-फूटा बर्तन	रंगोली
मुर्गा	तोरण (बंदनवार)
कुत्ता	फिटकरी
बिल्ली	तुलसी का पौधा
खाली कलश	आँवला का वृक्ष
टूटी-फूटी या जली हुई प्रतिमा	देसी गाय
बबूल का वृक्ष	भरा हुआ कलश
	दीपक

10. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है । प्रश्न है,-

“निम्नलिखित में से कौनसा त्योहार श्रावण मास में आता है?”

विकल्प है -

[a] कृष्ण जन्माष्टमी

[b] गणेश चतुर्थी

[c] रक्षा बंधन

[d] दशहरा कृष्ण

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम सभी श्री आशारामायणजी की पंक्तियां दोहराएंगे । https://youtu.be/bl57Gh3T4ps (कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे-

संत तुलसीदासजी जयंती विशेष...

https://youtu.be/ZPm0yOw70CY

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
- राख में ऐसे कौन से गुण होते हैं जिससे बर्तन की चिकनाई खत्म हो जाती है?
- राख को नेचुरल स्क्रबर क्यों कहा जाता है?
- घर में क्या चीज शुभ होती है और क्या अशुभ सभी बच्चे एक एक बताएंगे।
- आज के सत्संग से आपको क्या सीख मिलती है?

14. पूर्णाहूति

आरती - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

नारायण नारायण नारायण नारायण।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ!!!

<u>दीपज्योति एवं आरती</u> -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है-[C] रक्षा बंधन श्रावण मास की पूर्णिमा को आता है ।

****

दूसरा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका) :-

हरि ॐ बच्चों !! आज का बाल संस्कार केंद्रित है "रक्षाबंधन" पर । हमारी भारतीय संस्कृति त्याग और सेवा की नींव पर्व-पुष्पों की माला से सुसज्ज है। इस माला का एक पुष्प है रक्षाबन्धन का पर्व। यूँ तो रक्षाबन्धन भाई-बहन का त्योहार है, लेकिन व्यापक अर्थ में आज का दिन शुभ संकल्प करने का, परमात्मा के सान्निध्य का अनुभव करने का दिन है, ऋषियों को प्रणाम करने का दिन है।

आज की कहानी में हम आपको बताएंगे किस प्रकार भगवान श्री कृष्ण ने द्रौपदी की रक्षा करने के लिए वस्त्र अवतार लिया और द्रौपदी द्वारा बांधे गए एक-एक धागे का ऋण चुकाया। इसके बाद हम आपको बतायेंगे कि सनातन धर्म में श्रावणी पूर्णिमा और रक्षाबंधन का क्या सांस्कृतिक महत्व है। फिर हम जानेंगे की रक्षाबंधन के दिन ऐसा क्या करें कि राखी बांधने का प्रभाव कई गुना हो जाए और हमें इसका अधिक फल प्राप्त हो। इसके अलावा भजन, ज्ञान का चुटकुला, प्रतियोगिता

प्रश्न और अंत में पूज्य बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे रक्षाबंधन विशेष सत्संग।

तो आइये, सदाचार में बाँधनेवाले, विकारों से रक्षा करनेवाले इस पावन पर्व पर पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क में रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती फुर्ती मे मदद मिलेगी ।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे । त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3) आओ सुनें कहानी :-

श्री कृष्ण का वस्त्र अवतार...!!

बच्चों, महाभारत के समय की घटना है। एक बार महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया। उसे यज्ञ में सभी राजा महाराजा शामिल हुए। युधिष्ठिर ने पूजा आरंभ की और भगवान अग्रपूजा के लिए श्रीकृष्ण का चयन किया उन्हें ऊँचे आसन पर बिठाया। लेकिंन वहां उपस्थित राजा शिशुपाल जो कृष्ण से घृणा करता था, क्रोध से आग बबूला हो गया।

शिशुपाल (क्रोध में): - "युधिष्ठिर, यह ग्वाला, यह चरवाहा, यह तुम्हारे अग्रपूजा के योग्य है? यह तो गोपियों संग नाचने वाला नीच है!"

सभा स्तब्ध हो गई। उसके बाद शिशुपाल श्री कृष्ण के लिए एक के बाद एक अपशब्द बोलता रहा, परन्तु श्रीकृष्ण शांत मुद्रा में सब सुन रहे थे, क्योंकि उन्होंने शिशुपाल की माता से उनके पुत्र के सौ अपराधों को क्षमा करने का वचन दिया था। पर जैसे ही सौ अपशब्द पुरे हुए, श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र उठाया।

कृष्ण (गंभीर स्वर में): "शिशुपाल! मैंने तुम्हारे सौ अपराध क्षमा किए, पर अब धर्म की रक्षा के लिए तुम्हारा अंत आवश्यक है।"

सुदर्शन चक्र चल पड़ा। शिशुपाल का सिर कटकर धड़ से अलग हो गया। सारी सभा भयभीत हो गई। शिशुपाल का अंत होते ही सुदर्शन चक्र लौट आया। चक्र लौटते समय उसका किनारा कृष्ण की उंगली को छू गया। खून की धर बह निकली। विशाल सभागार में सब भयभीत और स्तब्ध रह गए।

उस सभा में द्रौपदी ने भी वह दृश्य देखा, वह तुरंत भागकर आई।

द्रौपदी (विवश भाव से): "स्वामी! आपकी अंगुली से रक्त बह रहा है। प्रतीक्षा मत कीजिए।"

द्रौपदी ने बिना देर किये अपनी साड़ी के किनारे से एक पट्टी फाड़ी और उसे भगवान की खून बहती उंगली पर लपेट दिया जिससे उनका खून बंद हो गया।

कृष्ण ने अपने हाथ में उसकी साड़ी के कपड़े को देखा और उन्होंने वे शब्द कहे: “बहन, तुमने मेरे घाव के लिए अपने वस्त्र का धागा दिया है। मैं अब तुम्हारा ऋणी हूँ। और एक समय आएगा जब मैं इसके हर एक-एक धागे का ऋण चुका दूँगा। मैं वचन देता हूँ, जब भी तुम संकट में होगी, मैं स्वयं तुम्हारी रक्षा करूँगा।” द्रौपदी ने श्रद्धा से सिर झुका दिया। सभा में यह दृश्य सभी के हृदय को छू गया।

कुछ वर्षों बाद महाभारत में एक ऐसा समय आया शकुनी द्वारा धोखे से रचे गए जुए के खेल में युधिष्ठिर फंस गए थे और उन्होंने सब कुछ दांव पर लगा दिया, अपना धन, अपना राज्य, अपने भाई, स्वयं को और अंत में द्रौपदी को भी वो जुए में हार गए। तब दुर्योधन के आदेश पर कुरुओं के पूरे मौन दरबार के सामने उसका भाई दुशासन द्रौपदी को बालों से पकड़कर सभा में घसीट लाया और उसके शरीर से साड़ी उतारने लगा।

द्रौपदी ने उस महल में चारों ओर देखा। वहां भीष्म पितामह थे, उस युग के सबसे महान योद्धा - गुरु द्रोण थे, संसार के सबसे शक्तिशाली पुरुष द्रौपदी के पाँचों पति थे। परन्तु जुए के हार के नियमो के कारण सब के सब सिर झुकाए बैठे थे। महान कुरुवंश की महारानी को सभा के बीच नग्न करने का

प्रयास किया जा रहा था। परन्तु उनमें से एक भी नहीं उठा, जो द्रौपदी की रक्षा करने में समर्थ था।

तब द्रौपदी पूरी तरह से निराश हो गयी, उसने सभासदों से फरियाद करनी बंद कर दी। उसने अपने हाथ में पकड़ी साड़ी भी छोड़ दी और दोनों बाहें ऊपर उठाईं और अपने इकलौते भाई को पुकारा, उसी कृष्ण को जिसने वचन दिया था "जब भी तुम संकट में होगी, मैं स्वयं तुम्हारी रक्षा करूँगा।". हे द्वारकाधीस, केशव मैं आज भरी सभा में अपमानित हो रही हूँ। हे स्वामी असहायों के रक्षक मेरी लाज बचाइए"

दुशासन साड़ी खींचने लगा, परन्तु भक्तो के रक्षक भगवान कृष्ण वस्त्र अवतार लेकर द्रौपदी की साड़ी में प्रवेश कर गए ... द्रौपदी हाथ जोड़े घुमती जा रही है और आर्त भाव से भगवान को पुकारती जा रही है (भजन - श्री कृष्ण गोविंद हरे मुरारी हे नाथ नारायण वासुदेवा...) दुशासन साड़ी खिंचता जा रहा है, द्रौपदी घुमती जा रही है, कपड़ा बढ़ता गया, वह खींचता गया, खींचता गया, पूरा दरबार रेशम की साड़ी से भर गया, परन्तु द्रौपदी की साड़ी खत्म ही नहीं हुई ।

सारा दरबार आश्चर्य से देखता रहा। सौ-सौ हाथियों का बल रखने वाला शक्तिशाली दुशासन आखिर स्वयं

पसीने से तरबतर और थक कर ज़मीन पर गिर पड़ा और कहने लगा – अरे ये नारी है कि साडी है..., कोई अंत ही नहीं हो रहा।

द्रौपदी को भगवान कृष्ण का वचन याद आया "बहन, तुमने अपने वस्त्र का धागा दिया है, एक दिन समय आएगा जब मैं इसके हर एक-एक धागे का ऋण चुका दूँगा।"

हम तो भगवान और गुरुदेव को थोडा-सा ही कुछ अर्पण करते है, परन्तु भगवान और गुरुदेव हमें अनंत करके ही लौटाते है, क्योंकी वो स्वयं अनंत स्वरूप है।

कहते है तभी से रक्षा बंधन के दिन बहन अपने भाई की कलाई पर तो राखी बांधती ही है, परंतु शिष्य भी अपने गुरुदेव को और भक्त अपने भगवान को भी राखी भी बांधते हैं, और अपनी रक्षा का वचन लेते है।

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे- कृष्ण कन्हैया लाल की जय, श्री सदगुरुदेव भगवान की जय....

4. ज्ञान का चुटकुला :

भाई-बहन की लड़ाई हो गई... दिनभर चुपचाप रहने के बाद बहन भाई के पास आकर बोली- इस तरह झगड़ा करने के बाद अच्छा नहीं लग रहा, एक काम करते हैं, हम समझौता कर लेते है. थोड़ा तुम करो, थोड़ा मैं करती हूं।

भाई- ठीक है, क्या करना है?

बहन - तुम मुझसे माफी मांग लो और मैं तुमको माफ कर देती हूं....

5. श्लोक :-

येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामभिबध्नामि, रक्षे मा चल मा चल॥

अर्थ :- जिस प्रकार महान पराक्रमी और शक्तिशाली दानवेन्द्र राजा बलि को रक्षा-सूत्र (धागे) से बांधा गया था, उसी प्रकार मैं तुम्हें बांधती हूँ। हे रक्षा-सूत्र! तुम इनकी, हर तरह से रक्षा करना और (हे भाई!) तुम अपने संकल्प से कभी विचलित न होना, अडिग रहना।

6. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की ।

आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है ।

प्रश्न है,- **“माता लक्ष्मी जी ने किसे राखी बांधी थी?”**

विकल्प है -

[a] देवराज इंद्रको

[b] नारद जी को

[c] देत्य राज बलि को

[d] भगवान शिव को

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

7. गतिविधि

अब बारी है गतिविधि की - आज की गतिविधि है वैदिक राखी बनाएँ -

वैदिक राखी बनाने के लिए दुर्वा, चावल, केसर, चंदन, सरसों को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लेकर एक पीले रंग के रेशमी कपड़े में बांध लें यदि इसकी सिलाई कर दें । इनके अलावा राखियों में हल्दी, कौड़ी व गोमती चक्र भी रखा जा सकता है। रेशमी कपड़े में लपेट कर बांधने या सिलाई करने के बाद इसे कलावे (मौली) में पिरो दें। ऊपर से आपको जो भी सजावट करनी हो, सात्विक चीजों से कर सकते हैं । आपकी राखी तैयार हो जाएगी। इस राखी को हम गुरुमूर्ति को अर्पित करेंगे । (अगर आपको अधिक वैदिक राखी चाहिए हो तो आप आश्रम से अथवा ऑनलाइन स्टोर से भी मंगवा सकते हैं जिसका लिंक नीचे डिस्क्रिप्शन में दिया हुआ है।)

8. पर्व महिमा :-

रक्षाबंधन

बच्चों, इस बार 27 और 28 अगस्त को श्रावणी पूर्णिमा और रक्षाबंधन है। सनातन धर्म में इसका बहुत बड़ा सांस्कृतिक महत्व है।

- भविष्य पुराण में आता है ‘इस पर्व पर धारण किया हुआ रक्षासूत्र सम्पूर्ण रोगों तथा अशुभ कार्यों का विनाशक है। इसे वर्ष में एक बार धारण करने से वर्षभर मनुष्य की क्षा होती है ।’ शचि ने इन्द्र को राखी बाँधी तो इन्द्र ने युद्ध में विजय प्राप्त की। कुंता ने अभिमन्यु को राखी बाँधी और जब तक राखी का धागा अभिमन्यु की कलाई पर बँधा रहा तब तक वह युद्ध में जूझता रहा। पहले धागा, टूटा, बाद में अभिमन्यु मरा। धागा तो छोटा सा होता है लेकिन बाँधने वाले का शुभ संकल्प और बँधवाने वाले का विश्वास काम कर जाता है।
- इस पर्व पर बहन भाई के लिए शुभकामना करती है। ऋषि अपने शिष्यों के लिए शुभकामना करते हैं, शिष्य भी अपने गुरुवर के लिए शुभकामना करते हैं कि ‘गुरुवर ! आपकी आयु दीर्घ हो, आपका स्वास्थ्य सुदृढ़ हो। गुरुदेव ! हमारे जैसे करोड़ों-करोड़ों को तारने का कार्य आपके द्‌वारा सम्पन्न हो।’

- इस दिन गुरुदेव को मन ही मन राखी बांधते हुए हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि ''हे मेरे सद्‌गुरुदेव! जब-जब दुनिया की उलझनों और आकर्षणों में मैं गिर जाऊँ, तब-तब आप मेरी रक्षा करना । हे गुरुदेव ! हम आपको धागे की नहीं, परन्तु श्रद्धा तथा प्रार्थना की राखी बाँध रहे हैं। हमें अपनी प्रेमाभक्ति देना' ।

9) भजन :-

अब सभी बच्चे गाएंगे भजन -

साधकों ने है बाँधी प्रेम की डोरी ...

https://youtu.be/7jpa0ocgUxY

10) क्या करें, क्या नहीं ? :-

रक्षाबंधन के दिन क्या करें क्या ना करें -

बच्चों, इस बार रक्षाबंधन को राखी बाँधने का शुभ मुहुर्त दिनांक अगस्त 28, 2026 शुक्रवार को है। राखी बाँधने का

कार्यक्रम शुभ मुहूर्त सुबह - 05:57AM से 09:48AM तक है। ध्यान रखें शुभ मुहूर्त में ही राखी बांधे।

रक्षाबंधन के दिन वैदिक रक्षासूत्र बाँधने से वर्ष भर रोगों से हमारी रक्षा रहे, बुरे भावों से रक्षा रहे, बुरे कर्मों से रक्षा रहे'- ऐसा एक-दूसरे के प्रति सत्संकल्प करते हैं। साधारण राखी की अपेक्षा वैदिक राखी का अधिक महत्व होता है, संभव हो तो अपने भाई को वैदिक राखी बांधे।

वैदिक राखी बनाकर एक राखी को सर्वप्रथम गुरुदेव के श्री-चित्र पर अर्पित करें । फिर बहनें अपने भाई को, माता अपने बच्चों को, दादी अपने पोते को शुभ संकल्प करके बांधे ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bl57Gh3T4ps

12. सत्संग श्रवण

अब हम सुनेंगे पूज्य बापूजी की अमृतमयी वाणी ...

https://youtu.be/btDrzFXtlS0

सम्पूर्ण रोगों व अशुभ का विनाशक और शत्रुओं से रक्षा करनेवाला पर्व - रक्षाबंधन |

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- रक्षाबन्धन पर्व का व्यापक अर्थ क्या है?
- श्रीकृष्ण शिशुपाल को अपशब्द के लिए क्यों क्षमा करते रहे?
- जब श्रीकृष्ण की उंगली में खून आने लगा तब द्रौपदी ने क्या किया?
- श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को क्या वचन दिया?
- श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की रक्षा किस प्रकार की?
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
- श्रावण मास की पूर्णिमा का के दिन क्या गतिविधियां होती है?
- श्रावण मास की पूर्णिमा का क्या सांस्कृतिक महत्व है?

- वैदिक राखी बनाने के लिए किन सामग्री का प्रयोग किया जाता है?
- राखी बांधते समय किस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए?
- आज के सत्संग से हमें क्या सीख मिलती है?

14. पूर्णाहूति :-

<u>दीपज्योति एवं आरती</u>

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय ॥
ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है ।

[C] लक्ष्मीजी ने देत्यराज बलि को राखी बांधी थी |

भक्त के प्रेम से वश होकर जो द्वारपाल की सेवा करते हैं, ऐसे भगवान नारायण को द्वारपाल के पद से छुडाने के लिए लक्ष्मीजी ने भी रक्षाबंधन महोत्सव का उपयोग किया ।

****